गजेन्द्र सिंह शेखावत
Gajendra Singh Shekhawat

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

जल शक्ति मंत्री
भारत सरकार
Minister for Jal Shakti
Government of India

संदेश

जल सदैव भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। हमारे देश में जल संसाधनों के प्रबन्धन का इतिहास सिंधु घाटी की सभ्यता से भी पुराना है। प्राचीन काल से ही भारतीय–भागीरथों ने सभ्यता और संस्कृति के विकास के साथ–साथ भारत की जलवायु, मिट्टी की प्रकृति और अन्य विविधताओं को ध्यान में रखकर बरसाती पानी, नदी–नालों, झरनों और भूजल संसाधनों के विकास और प्रबन्धन के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की थी।

यह प्रसन्नता का विषय है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की द्वारा ''प्राचीन भारत में जलविज्ञानीय ज्ञान'' नामक पुस्तक का तीसरा संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। इस पुस्तक में वेदकालीन प्राचीन भारत से लेकर हड़प्पा युगीन सभ्यता तक के विभिन्न क्षेत्रों में जल–संचयन एवं प्रबंधन–व्यवस्था एवं जल स्रोत को पल्लवित एवं पोषित करने के लिए मानवीय प्रयासों की विस्तृत चर्चा की गई है । इस पुस्तक में प्राचीन लेखों, अभिलेखों, पुराणों, उपनिषदों आदि में वर्णित नहर, तालाब, बांध, कुंए और झीलों का विवरण विस्तार से दिया गया है। प्राचीन काल में जल को विविध रूप से संग्रहित कर सदुपयोग किया जाता था। मनुस्मृति के अनुसार तालाबों, पोखरों, नहरों एवं अन्य जलाशयों से गाँव का सीमांकन किया गया है। इस पत्रिका से हमें हमारे गौरवशाली प्राचीन भारतीय मनीषीयों के जलविज्ञानीय ज्ञान के सशक्त प्रमाण देखने एवं समझने को मिलते हैं।

मैं राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की के इस अनूठे प्रयास की सराहना करता हूँ तथा इस पुस्तक के विमोचन पर संस्थान को बधाई देता हूँ । मैं यह आशा करता हूँ कि यह पुस्तक अपने मूल ध्येय को सफलतापूर्वक प्राप्त करेगी तथा प्राचीन भारत के गौरव एवं ज्ञान को पूरे विश्व में संप्रेषित करेगी।

(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

जल शक्ति अभियान
संचय जल, बेहतर कल

Office : 210, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110 001
Tel : No. (011) 23711780, 23714663, 23714200, **Fax :** (011) 23710804, **E-mail :** minister-jalshakti@gov.in

गजेन्द्र सिंह शेखावत
Gajendra Singh Shekhawat

जल शक्ति मंत्री
भारत सरकार
Minister for Jal Shakti
Government of India

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

MESSAGE

Water has always been an integral part of our Indian culture. The history of management of water resources in our country is older that the Indus Valley Civilization. Since ancient times, along with the development of civilization and culture, the Indian-Bhagiraths had considered the importance of the climate, soil, nature and other variations across the country for the managing the water resources and made remarkable progress in the field of development and management of this precious natural resources.

It is a matter of pleasure that the National Institute of Hydrology, Roorkee, is going to publish the third edition of the book "Hydrological Knowledge in Ancient India". This book has a detailed discussion of human efforts for water harvesting and management system and nurturing water sources in various spheres during the period ranging from Vedic ancient India to the Harappan civilization. The works on Canals, Ponds, Dams, Wells and Lakes described in ancient articles, Inscriptions, Puranas, Upanishads etc., are also presented in detail. In ancient times, water was stored in different ways and put to good use. The book also provides the strong evidence of hydrological knowledge of our glorious ancient Indian saints.

I appreciate and congratulate the unique effort of the National Institute of Hydrology, Roorkee in releasing the book. I hope this book successfully achieves its goal and spreads the glory and hydrological knowledge of ancient India to the whole world.

(Gajendra Singh Shekhawat)

जल शक्ति अभियान
संचय जल, बेहतर कल

Office : 210, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110 001
Tel : No. (011) 23711780, 23714663, 23714200, **Fax :** (011) 23710804, **E-mail :** minister-jalshakti@gov.in